

DPN 6289

Title : ^{विधि} देगुडि पूजा DE GUDI PŪJĀ VIDHI

Run. No. 6980

Cat. No. 29

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21 x 10

Folios 23

Lines (in a page) 18 irregular

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Shree Natha

Author / translator

Scribe / donor

श्रीनाथ / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 953

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper ✓ / thyasaphu /

Condition : fine ✓ / damaged ✓ by worms, rats, water ✓ /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ देगुडि पूजा विधिः ॥ यजमानाचम्या चन्दन पुष्प भूषणं ॥ ॥

15
△ इति श्री देव्याः प्रतिवार्षिकं हेमजाती पुष्पा रोदनं पूजाविधिस्तमाहृतम् ॥

सं ९५३ मिति आश्विन कृष्ण पञ्चमी शनैश्चरवारं च कुण्ड वरा श्याम-
सुन्दरं पश्चात् दयका तवग्दाली स्वयां ओ श्रीनाथन चोपा जुल ॥ शुभ ॥

20

15

10

5



खदगापु २

5

10

[illegible]

अभिमारवलयादेव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना वन्या ॥
चन्दनपुष्पसुखमनी ॥ ॥ चन्द
नादकनपुष्पकुलं गृहीत्वा सु
खी भवेत् ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिद्वानस्य श्री ३
स्वस्त्यस्तु वंशसुप्रीतिकामन
यापुनरिवाचिदं दं मज्जानी
पूष्यावनेह नमो सदा नमि
व पूजा कर्तुं श्री सूर्यायार्घ्यं
नमः ॥ पूष्ये नमः ॥ धूपं श
पूष्याशुभं कर्म पुनरुक्तं न
स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धिं न मुद्रिया न
म् ॥ यज न स्थिति ॥ पूष्या
ऊर्जे नमस्तु नमि ॥ ॥ ॥
पूजा ॥ स्नानं ॥ गंगामया मय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना वन्या ॥
चन्दनपुष्पसुखमनी ॥ ॥ चन्द
नादकनपुष्पकुलं गृहीत्वा सु
खी भवेत् ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिद्वानस्य श्री ३
स्वस्त्यस्तु वंशसुप्रीतिकामन
यापुनरिवाचिदं दं मज्जानी
पूष्यावनेह नमो सदा नमि
व पूजा कर्तुं श्री सूर्यायार्घ्यं
नमः ॥ पूष्ये नमः ॥ धूपं श
पूष्याशुभं कर्म पुनरुक्तं न
स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धिं न मुद्रिया न
म् ॥ यज न स्थिति ॥ पूष्या
ऊर्जे नमस्तु नमि ॥ ॥ ॥
पूजा ॥ स्नानं ॥ गंगामया मय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना वन्या ॥
चन्दनपुष्पसुखमनी ॥ ॥ चन्द
नादकनपुष्पकुलं गृहीत्वा सु
खी भवेत् ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिद्वानस्य श्री ३
स्वस्त्यस्तु वंशसुप्रीतिकामन
यापुनरिवाचिदं दं मज्जानी
पूष्यावनेह नमो सदा नमि
व पूजा कर्तुं श्री सूर्यायार्घ्यं
नमः ॥ पूष्ये नमः ॥ धूपं श
पूष्याशुभं कर्म पुनरुक्तं न
स्वस्त्यस्तु ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धिं न मुद्रिया न
म् ॥ यज न स्थिति ॥ पूष्या
ऊर्जे नमस्तु नमि ॥ ॥ ॥
पूजा ॥ स्नानं ॥ गंगामया मय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना वन्या ॥
चन्दनपुष्पसुखन ॥ ॥ चन्द
नादकनपुष्पकुलं गृहीत्वा सु
खी भवेत् ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिद्वानस्य श्री ३
स्वस्त्यस्तु वन्या सुप्रति कामन
यापुति वार्षिकं दं मज्जानी
पुष्पावने हनन्त्या सदा नि
वपूजा कर्तुं श्री सूर्यायार्घ्यं
नमः ॥ पुष्पे नमः ॥ धूपं श
पुष्पागलु कं मधुं लहसुन
सुखं ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धिं न मुद्रिया न
मे ॥ यजनस्थिति ॥ पुष्पा
जनं नमस्कृत्य नमि ॥ ॥ य
यज्जा ॥ स्नानं ॥ गंगामया मय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना वन्या ॥
चन्दनपुष्पसुखन ॥ ॥ चन्द
नादकनपुष्पकुलं गृहीत्वा सु
खी भवेत् ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिद्वानस्य श्री ३
स्वस्त्यस्तु वन्या सुप्रति कामन
यापुति वार्षिकं दं मज्जानी
पुष्पावने हनन्त्या सदा नि
वपूजा कर्तुं श्री सूर्यायार्घ्यं
नमः ॥ पुष्पे नमः ॥ धूपं श
पुष्पागलु कं मधुं लहसुन
सुखं ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धिं न मुद्रिया न
मे ॥ यजनस्थिति ॥ पुष्पा
जनं नमस्कृत्य नमि ॥ ॥ य
यज्जा ॥ स्नानं ॥ गंगामया मय

गंलुष्टं नानायाय पुनाय कं।
 पुन वृत्त्या ययुका नी साना
 र्थं न युक्तो व्यती ॥ **॥ इध**
नानी ॥ उ मधी वृय आरुमी
 दिव्यं तत्रिदं सर्वं कं। यथाध
 सत्यविगुनं कीन सान पु की
 किती ॥ **॥ दधि ॥** एम छव ता
 सादधिं वृत्त्यं उ मा य गियन
 छवतः ॥ न दध्ना स्या यथा मि
 त्वी सर्वपाय द्यार्थं कं ॥
॥ दध्ना ॥ कपिला या दृ नं लुष्टं
 नृणा वच य दह वं। रा सन
 दवगा सर्व सानार्थं न पु दृ
 किती ॥ **॥ मधु ॥** मधु मदि
 कसं रू गं न वधि नृ पु मा द
 कं। यो यो वध सनाथ त्वं म
 धु सान पु यामिती ॥ **॥ सु**
कीती ॥ सान पु च सम रू गं

मर्क नाग उ स्वा द कं। कामी पु
 राग पाद र्थं न सान नो कया
 मही ॥ **॥ त्रिलि सान नी ॥** सू ना
 कि मि वा मां स न त्यामी न स म
 रुमं। अद्वि सिद्धि नृ पत्थं
 त्रिलि सान द दामिती ॥ **॥ पु**
न जाली ॥ **॥ चन्दन ॥** ॐ दं मे
 लय मरु गं चन्दनं हि मणी
 गली। वी न जा दं गु रि नृ नृ ग
 हा ली म म सिद्धि ॥ **॥ सिन्धु**
नी ॥ पूर्ण व दं नृ दं गु स्य ली
 क न वी न रू य ली। गृ हा ली वी
 न वी न रू य सिन्धु न व र्ज दाय
 कं ॥ **॥ दधि ॥** स्रग्म म रू
 चया गाल च उ दं म म रू मि
 धु। दिव्य च दृ रू लं द हि द
 ही दं लो क यामिती ॥ **॥ ज**
जमकी ॥ उ य वी न मि दी द

वमत्र देव स्यात्कुरुनी गृहाद्य
 वीनयोगसहस्रं कुरुनी चकन
 म॥ ॥ नृजीलेखनश्रीन
 खानजानकाजगत् ॥ नृया
 दिवाय ॥ श्रीसदाशिवरुद्रान
 कायहमजातीयथावगाह
 नमूमरुममम ॥ खानकाय
 क॥ मालीनानाविधं चिपुं व
 लीसोतयेनिकुं नृ। नृलापूला
 लकचेवगृहात्मनरुलाफ
 य॥ ॥ वरुमा ॥ वरुविकी
 रुवैचुपुं विनामसिसमृत्
 म। मन्नामन्नादिकदवसापु
 नृपुगिगृष्टगी ॥ ॥ कर्षुपका
 क॥ कर्षुपथ्यगलैवेवपना
 कावर्षुसंयुतीदिव्यभयरु
 लैदहिगृहात्मनममममः ॥ ॥
 यक्षपनाका॥ यनाकार्यववर्षु
 नृयक्षगत्यात्मकयनीयपुत्र

नृरुलैतत्त्वैककयामियप्रवत्र
 ॥ ॥ नृरुवा ॥ नृरुनलिनमि
 यादकक॥ वृष्टमनलैवगाच
 कुलानिरुवस्थापेनृनेलो
 रुयानिच ॥ ॥ हानैखानमाल
 कायक॥ यष्टवासनवीयास
 वृषिद्विकुं प्रार्कसर्वपायक
 यार्थक। सर्वदायकयक्षानिदी
 तवासंगृहात्मम॥ ॥ नृयहा
 पुष्टपयामिदवेमलाजाचमृष्टि
 नासहा। नाशपाफिरुलैदहिगृ
 हात्मयप्रमममम ॥ ॥ नृरुजग
 लय॥ रुलपकाननृादि॥ रुलं
 रुलानिगाम्युलैदादिमंवीक
 पुत्रकै। वृष्टकैलादिकैसर्वरु
 लानियुगिगृष्टगी ॥ ॥ सपय
 नृवय॥ नृनमहाजसंदिर्वीन
 पुः वृष्टिः समन्तिनी। नृदन्नीगृष्ट
 नृदवनेवेष्टपुगिगृष्टगी ॥ ॥
 वृष्ट॥ साकायसहसंवेनवृष्टा

20

कृपाशायनमः॥ॐ कौं नन्दिन
 नमः॥ॐ कौं गिन्ननमः॥ॐ कौं
 महाकालायनमः॥ पूनर्वकु
 पूजा॥ॐ कौं सधाकाशायनमः॥
 ॐ कौं वामदेवायनमः॥ॐ कौं
 नृधायनमः॥ॐ कौं तत्पुत्र
 वायनमः॥ॐ कः॥ॐ गानाथ
 नमः॥ ॥ धूपदीपे॥ मूलन
 जय॥ ॥ॐ नमः॥ मिवाय
 सुधाकाशायनमः॥ कृष्णवद
 नमः॥ कौं कामपुदः॥ गंगल
 ललिगं मूसायवदनं श्री वा
 मदवाङ्मनः॥ धात्रे धात्रे कला
 नृधायनवदनं धात्रे मुखदक्षि
 णः॥ पूर्वतत्पुत्रं धात्रे मुखदक्षि
 दनं वृक्षदुःखगणेशं॥ॐ
 मादपुदं मूसायवदनं कौं
 नमिर्वक्ष्यते॥ पातालव
 नहाटं कृष्णमुखं नागं नृ
 संपूजितं॥ कृपामुक्ति॥ यज

मानसमयनिवात्रकस्य श्री ३
 स्वदेवतासूयानिका मनसा
 पुनिवारिकहमजातिपुष्पाव
 नाहनश्रीसदा मिवाचनेविद्य
 सुत्तर्वविधियनिपुल्लमम्॥ ॥
 न्यासी॥ॐ नमः॥ निमन्त्रि चक्षुष
 जा॥ॐ कौं वाचक्षुषनायनिमन्त्रि
 त्यवामिनीसहितायनमः॥ सह
 नमः॥ कौं वाचक्षुषनायनिमन्त्रि
 श्रीनिवात्रका॥ ॥ ॥

१ॐ नमः॥ श्रीचलिकाये॥ नृधदेव
 वने॥ यजमानाद्ये च नृधदेव
 सुमर्त्य॥ॐ नमः॥ कौं वाचक्षुषनायनिमन्त्रि
 हीत्वासूयार्थं॥ नृधदेव॥ यजमा
 नस्यमयनिवात्रकस्य श्री ३ स्वदे
 दवतासूयानिका मनसा पुनि
 वारिकहमजातिपुष्पाव नाह
 नश्रीसदा मिवाचनेविद्य सुत्तर्व
 विधियनिपुल्लमम्॥ ॥

五

[illegible]

नौ स्थापनयाय ॥ नंदलया वलि नू
ययागवाय ॥ स्नानमाल कृष्णाय क॥
मधिसंसावासा मूल बुद्धि रुक्मका
यवलि धनका अ कृष्णाय क॥ कं न
न कं ॥ श्रीगणेशाय ॥ ॥ ॥ ॥
धनका अ वाक्म न न कृष्णाय क॥
जायाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यित्तयेनाचम्य॥ नृणां त्मने य
 धीनमः॥ नृणां त्मने वृद्धमास
 नेनमः॥ ॥ गुणस्मने ॥ ॐ
 नृखलु मलुला कात्रमिया
 दि॥ ॐ नृगुणयो इकापृज
 यामिनमः॥ ॥ हकार. स
 कात्रकूटनन्या संयाधमया
 मया लयुगिष्ठी च॥ विरहा
 न्याम॥ नृगुणार्थानमः॥
 ॐ नृनीत्याम्ना ॥ श्री म
 ध्यामायावष्ट ॥ ॐ नृना

मि का र्थां हूं ॥ श्रीं कनिष्ठा
 र्थां वीर्यं ॥ नृं कन गल य
 का र्थां रुट ॥ हृदयादि ॥
 हृदया येन मः ॥ श्रीं मित्र
 म स्वाहा ॥ श्रीं मित्राय वष
 ट ॥ श्रीं कवचाय हूं ॥ श्रीं न
 र्गुं यय वीर्यं ॥ नृं न
 म्नाय रुट ॥ ॥ अलयाग
 यजा ॥ नृं जमूं श्रीं आनन्द
 हाकिं नवा ॥ नन्दवी
 नाधियगम ॥ श्रीं क
 लयागुरु दानका ॥
 यका इकां पूजया मि ॥
 हृदयादि ॥ श्रीं वादना ॥ दि
 चन्द नाक गय र्थं नमः ॥
 यात्रि मूलाध नृं मूला ॥ हृद
 सुखि ॥ श्रीं मूलाध नृं मूला ॥
 नृं जवां वीर्यं श्रीं वीर्यं

वीर्यं वीर्या इकां पूजया मित्रा
 तनं ध्यानं यथैव नमः ॥ ॥
 माहनीरु यथैव नृं ॥ प्रियलि
 ॥ नृं वां वटु कनाथं यथैव नृं
 लिङ्गं नृं स्वाहा ॥ नृं गमं कूल
 गल्लिङ्गं यथैव नृं वलिङ्गं नृं
 स्वाहा ॥ नृं कां कृपा लायं
 देवलिङ्गं नृं स्वाहा ॥ जय ॥ द
 धुगऊ खड्ग मूला ॥ श्रीं ॥
 धूय याय ॥ नृं श्रीं सुन्दरी ॥ मा
 सिनीय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीं नृं वटु नृं च ॥ जय त्वं मा
 लिनी देवी निर्मल मल नाशिनी ॥
 नृं नाकिः पुरुष देवी वृद्धि स्त्री ॥ जय
 विनी ॥ जननी सर्व रता नृं स मा
 मि नृं वलिङ्गं मा मा वी नृं वनी
 देवी का नृं वलिङ्गं नृं वलिङ्गं ॥ जय नि
 यत्र मगल्ये नि श्रीं स रता ॥ नृं जय

मयीनिःशुभाय कनूया यनासा
 नभकीस्तुमि काक्रियामंगलाज
 हुनखासुनखापुनःसूफनागद
 वल्लुलाका ननूया पुनचादम
 किमुसंगीयस. रासुनाध्यानिनूय
 स्यनूयासिवाधैरा नोमाच. कामा
 चनोडीअनाखाचिका॥विदूतग
 वधुगर्धवचाहनिस्तुपिका॥
 ॥अउमकात्रडांकात्रुंकात्रसं
 काअंग. गलमाययगं. गलनू
 पासुनूयागमकात्रवस्त्रायनी॥
 आदितःदीगगलाहवायानि
 यासुनूयाचन्रीक॥संमाहिनी
 नूदमागातथा नकठकिःपुन
 कादिपूरुसमनालीभनी॥शत्र
 शुगातिथीधमसिकास्तानुरगा
 हुनाखाचमधीसरोकीधसया
 स्मिकानगुदीअवुनासिगा॥त्वन
 हासनसंगीनीआउमाकासु
 गोविन्दसदाहिनीसन्ददहनुगा॥

कावमस्यकयनानन्दनिर्वाणसा
 लपुदनेनेवीनेनवायनकीजन
 मकं।यनामालिनीनूदमासाधिग
 नूदमकिरवगीसिद्धिगोणधनीसि
 धिमागाविगुःअव्यनामीगियाया
 ल्वी।वगिगुदामिकासिद्धिवागीध
 नीमाहकासित्वमिक्काक्रियामंगला
 सिद्धिलकी॥विहगिस्सूरुतिःसूरु
 निर्गिगिअठवतीरवागिनायायली॥
 नकचलुमकनालीखलसीमनूया
 महाकृष्णायागप्रिया।त्वनयंया
 र्जितानूदसंमाहिनीत्वनवासा
 नदवलयचोत्तमगयानासगा।मनु
 प्रार्त्तिनूगेमोलिहिमोहिरिहीन
 यानानूकेः।सुमकेअसंपूअस
 ।दवीयचामुगेदिवयानोसेवे
 म्पुर्ककालकायालिनी।नकज
 नादिजमगिजमचउखंचयट
 सफजुमाहवःअफवेसंयनो
 वेःगुरेःहलुगुरिसूर्यसंपशमां

[illegible]

10

20

[illegible]

15

10

5

यन्मः॥ जै गं ज वौ वा ग्राही
 विष्णु उ न म रु मे न वु व स हि ता
 ये या पू ज ॥ श्री गुरु ॥ ॐ दे व
 लि ॥ ॥ ॐ दुःखी ॥ नै ग जा
 स ना य न मः॥ नै ग यं ॥ ॐ भू
 ॐ दुःखी विष्णु क नाल रे वु
 न व स हि ता ये या पू ज ॥ श्री
 गुरु ॥ ॐ दे व लि ॥ ॥ वा म
 ॥ नै यं ग स ना य न मः॥ नै
 ग यं ॥ श्री गुरु ॥ नै यं ग स ना य
 न मः॥ नै ग यं ॥ श्री गुरु ॥ नै यं ग
 स ना य न मः॥ नै ग यं ॥ श्री गुरु ॥
 नै यं ग स ना य न मः॥ नै ग यं ॥ श्री
 गुरु ॥ नै यं ग स ना य न मः॥ नै ग
 यं ॥ श्री गुरु ॥ नै यं ग स ना य न
 मः॥ नै ग यं ॥ श्री गुरु ॥ नै यं ग
 स ना य न मः॥ नै ग यं ॥ श्री गुरु ॥

उवा लाय वा पू ॥ ॐ देवलिग
 कर स्वाहा ॥ ॐ जंजीं देवी पू व
 दु कनाथ कयिल जटा रा न रा म
 न विन पुष्पा ला मुख जे व त न र
 उरु हिरुग व न म लु ल म ॥ ॐ
 ॥ ॐ ययं नाना वालि ग करु वां वि
 नार्थ दद सु म कं कं कं रु द स्वा
 हा ॥ ॐ जं ॐ दे व स्वा ना धि य न
 यं यथ ना म नै व त न म लु ल
 म ॥ ॐ नै व त न र च उ र्जु ज वि
 न उ को अ ख द्वा ष ख फु रु ट
 क रु ल या ल अ म हा क यो ल
 मा ला रु न ल य वि द्वा त्का टि
 म म प रु पु र हिरुग व न
 रै व व रु पे न य ॥ ॐ ययं न
 ना वालि ग करु म म वि द्वा
 का द य जां जीं कं रु द स्वा
 हा ॥ ॥ ॐ जं य कं वि न यो

मिनी नी यी ॥ जा दे ग जा स ह
 जा या ग जा ग ह जा क ल जा स
 ॥ ॐ जा य कं वि न य मि नी
 नी ख च नी रु च नी उ म च नी उ
 का द नी द्वा दे नी य द नी च रु
 य ॥ ॐ द नी न वा द नी ली मि
 ज ग द्वा स नी नी य ॥ ॐ ययं ना
 ना वालि ग करु म म सि धिं क
 र्च रु स्वा हा ॥ ॥ ॐ जं ॐ दे व
 श्री सि धि च म लु ल य वालि ग
 करु स्वा हा ॥ ॥ ॐ जं मं गी
 गं गः ॥ ॐ श्री क ल ग ल ॥ ॐ
 य वालि ग करु स्वा हा ॥ ॥ ॐ जं
 जां जीं जीं कं रु द य द ना द स
 रु गा य कं ना लो दे ग या ल काः ॥
 जा कि ली च न थ मा ला पू ट ना
 क ट पू ट ना ॥ ॐ ॐ जा दे ग जा
 ॥ ॐ व ग कं जा स ह जा ग थ ॥

योगजामनुजाव्यवकृतजा
 मयि विष्णुमः॥ नाना रूपध
 नाचान्नायोगिन्यावलवक
 ना॥ नानादभनिवासिन्या
 नस्मिन् चक्रे समागतः॥ सु
 मया कस्तुभ्यचान्ना कथावा
 वलिकी दत्तः॥ हृद्यनुग्रा
 सर्वलोकगन्धर्वयहल
 भुक्तः॥ हृद्यलहनुमं को
 मानवाभुक्तनुददनुम॥
 जां जां कुरुदत्ताहा॥ ॐ द
 वलिंगद्वरस्थाहा॥ ॥ त्रैप
 यागमदिदेवस्थाहनुकादि
 लेन देवस्थासिगांमदिरो
 नवेस्थावेकास्थादिमाह
 काये ॐ देवलिंगद्वरस्था
 हा॥ ॥ त्रैप सर्वपी ॥ भय
 पी भनिवात्रोपधानमव

वादे गायकं मदाहाः सद्यदिगा
 मर्षकिताः॥ ॐ देवलिंगद्वरस्था
 हा॥ ॥ त्रैप समस्तमनुपी ॥ ० सिंह
 सनपी ॥ भयपी ॥ ० दे गायकं म
 दाहदिव्यसिद्धिसमयचक्रपादकी
 पूजयामि॥ ॐ देवलिंगद्वरस्था
 ॥ समयवलिंग ॥ त्रैप उका नृकंचय
 लिंचिद्रुसर्वददयायपादकी
 पूजयामि॥ ॐ देवलिंगद्वरस्था
 हा॥ ॥ यजमानसमष्टीष्टदव
 गासुपीगिकामनयाभीवेभद्वी
 सगलभवनलभयेष्टदवगाये
 यगिवासिकहमजागीयुष्यावने
 हलपूजावलिंगद्वरस्थानिकद्वर
 द्रुमममनदरद्वरस्थाहा॥ ॥
 ॐ त्रिवलिपुदानी॥ हलपुदानी
 ली॥ ॥ यनचन्दनादिपूजायाय
 ॥ धूप॥ दीप॥ समयमेवय॥ ॐ
 लयकानिगम्यरादिद्रुय॥ ॥
 गायहाहा॥ ॥ मूलजामिचिलुकी

या जय ॥ १ मधुसूदनयकं स्मरति ॥
 उं नमः शिवाय ॥ श्रीगुरुवे न
 मः ॥ अखलमधुलाकारं ॥ उं श्री
 मधुका ॥ वटका ॥ दं ॥ या गि
 नी ॥ कामधुमा ॥ गलपति ॥ ॥ म
 लया ॥ उं वैष्णवी गार्दना नृणां
 मङ्गी पीतवाससा गदाद्विन्दु
 मूला च वैष्णवी च नमामुते ॥ नम
 रुद वद वंशी सिद्धि लेखी महा
 उसा ॥ प्रथमिना महादेवी नमः
 लेखी नमामुते ॥ वृक्षा लीकमते
 नृ ॥ दं मा मुनि ॥ वाय ॥ नृपगच्छ
 दि ॥ ॥ वापि पूजा ॥ वापि सि
 लाव तलिस्तनय ॥ चन्दन सिन्दूर
 नृकत ॥ स्नान ॥ स्थापन ॥ पू
 जा ॥ या ॥ उं श्रीं कालि रव
 ऊर्ध्व ॥ त्रिनाहदधुये नमः ॥ ३ ॥
 उं खड्गाय खननाभय ॥ कि
 कार्याय नमः ॥ यद्युद्धं दत्त
 याणी प्रखरनाथ नमामुते ॥

वा नमः खननाभय ॥ स्नान च
 चन्दन पुष्प ॥ धूप दीप समयन
 क ॥ च उं स्मरति ॥ ॥ शिवसि
 लमधनी ॥ यं ॥ नं ॥ वं ॥ ॥
 आहामर्क ॥ उं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 नृ लाय मन्मथ नमः ॥ ॥ श्रीं
 कलखकाया गङ्गा नमः ॥ श्रीं
 उं यद्युग्म यजक नमः ॥ उं श्रीं
 यद्युग्म यजक नमः ॥ विश्वकर्मा
 लोधी महि ॥ नमो मोक्षः प्रय
 दयात् ॥ ॥ यजमान नमः ॥
 नलखकाया गङ्गा नमः ॥ श्रीं
 क ॥ नृपगच्छ ॥ वाय ॥ नृपगच्छ
 नृयादि ॥ यजमानस्य सद्यः
 वा नमः ॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 निका मन्मथाय श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 प्रतिवार्षिकं नमः ॥ श्रीं श्रीं
 यजमानस्य सद्यः ॥ श्रीं श्रीं
 श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 वा नमः ॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 मन्मथाय श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 यद्युग्म यजक नमः ॥ श्रीं श्रीं

15

10

5

10

15

20

विन्दुमध्यगतं विन्दुद्विजं चार्द्ध
 चन्द्रकें। गुणात्रकलिकातामं
 दशकावलमिनि। उमाईहृद
 गं। गेनिद्वादशदित्यवसं
 न्येन्यानावावस्तुहं सारवाप्र
 लधामिनि। लम्बाख्यपत्रमंदवी
 दक्षिणकुत्रगमिनी। नासाग्र
 गुममूडीर्लम्बधूम्रपुवाहि
 नि। हृत्पत्रयत्रमानन्दगालूम्रि
 यवस्ति। नादधलिकर्मवृष्ट
 गुल्लष्टकसमन्विता। स्तुल्लसुत्र
 त्वर्मकुत्रधर्माधर्मपूटद्वय
 कार्याकात्रलककुल्लिगुन्याना
 दविगुहं। यत्रयत्रयत्रयुद्धये
 गन्यममयमधुव। सर्ववर्द्ध
 त्रीदविगुहगन्धिविगुहं
 गकिमूलमहावृहविन्दुवकु
 समन्विता। नूनात्रीमहाकाय
 संयत्रार्द्धवगात्रिलि। जयाच
 विजयाचैव जयनीचायनाजि
 ता। उम्रुवकीजमध्यस्तिनमसा

पायमावनि। वन्दमादकत्रीदवि
 सादशमन्ववस्ति। रुदिनीम
 किमूलनमहावृहसमन्विता। उ
 मलीयापली। गेनीमायायनुपुवा
 हिनी। स्तुल्लन्दयेनवीदविमकुल्ल
 न्मकुल्लयेनवी। यैचागद्वर्द्धन्युयस्का
 स्तुल्लयत्रुजाः प्रकीर्तिताः। नूनाख्य
 नूनाख्य। नममकुल्लनसेनवी। दंष्ट्रा
 ल्कटविद्युजिह्वागत्रकादिरुयान
 नानमामिदवद्वर्द्धमिन्नधात्रधात्र
 नूयिलि। कालामुखीयगवतीउमा
 दवीनमाकुत। यागिनीचक्रियाद
 वि। गेनीलकीसत्रस्वगी। हंसस्वना
 द्दुगदविगुहमुखीमकिंमालिनि
 ॥ कौकुकी। नूनामदवि। इमर्माकाया
 यलीमिवा। निर्यक्षिनासमाख्या
 गत्रकाचैकादगायना॥ वृद्धीमा
 हृदयत्रीयेवकीमात्रीयेवकीतथा
 वात्राहीयेवमाहृदी। चामुल्लच
 रुयानना॥ यागमिर्त्यदिद्वमि
 कृलायकविरुधिग। नून्दीयेवकु

२०
 आलनर्या यासा नैर्भयवा नृली ॥
 वायवा येव कोव नी ॥ नैमम
 दाहना ॥ उकोद वमुयो मूर्तिवु
 अविष्मह धरा ॥ नृकात्रुतु
 वदुक्का उकोत्र विष्मू नृयगा म
 कात्रुद ॥ नृकः समयाद वि
 नभा मुग ॥ नृक यक न नाल
 पयना लैस कर्त्तु क ॥ नृक नृ
 महाद विष्म नृयी नभा मुग ॥
 पुयाग वनृ ली कोला नृदह मा
 जयनिका ॥ वनिगे को मुक ॥
 वदवी काष्टु गु चाष्टु क ॥ नृमिती
 ल नृनृ लुकी धउ नृक से न
 वः क नाली ली वला ॥ नृव मं हा
 नृव व चाष्टु धा ॥ नृध का ली उ
 मादवी द व हति नभा मुग ॥ नृ
 ड काली महाद वि चर्म मू लुग
 यावह ॥ महा कृष्ण महा धा नै
 नम मम कि नृयि ली ॥ नृक वः स
 तिहा हा नृद याले वरु नृध म
 हा ना र्थि ना महा माथे नृदिहा

मवदिगुं यस्मिदं य ० मं मं गिरि मं
 ध्वं वेव मानवः ॥ प्राप्ता निचिनिगा
 कामान् मू ली र व नि व लु र ॥ पा
 ये ग यत्र मं हा नै निर्वी ली पत्र मं
 यदी ॥ ॥ नृमिती निव धा कि सम
 नृलं महा माय ली र म माफ म ॥
 द माफ ति ॥ नृग ग धा दि ॥
 मलु ल वि स र्ज न ॥ ॥ नृनृ का
 नृक रु व नि मूर्ति रु ग ती पू लु
 धत्री वा स व ॥ नृग जी ग ग ल ॥
 य मा र ग व ती नि ॥ नृध नृ द दि
 ल ॥ हा ना ग म्य वृ ल धत्री वृ ल
 ग ल वा नृध दि म म कां श्री वा
 मां पु ल मा मि वि ष्ठ रु न नृद र्ज
 धत्री सिद्धि दी ॥ ॥ नृमा ॥
 र्दी ॥ नृनृ ध पू र्व ग ती ॥ नृन
 निवृ ध का मं कृ य ॥ ॥ थ म ध
 का रि नृ दि नृ द व जा य र क द
 दि ल धा य क ॥ म गु ॥ मा ह नी
 वि स र्ज न या य द व या न म गु
 ल मा ह नी धा य क ॥ थ का उ न
 वा क पू र्ण का य ॥ सिद्ध नृक का य

15

10

5

थं काठिलयगुथं ॥ सु
 वनाहनवोक् ॥ थं काठिवा
 हानस्यायं लो लखयाथन
 इतं वाहानसं कलयाचक
 पूजाधुनसं नृमगुलं ॥
 दिविशुक्ला पूजादक्षिण
 दानं ॥ आशीर्वादपूजाधुन
 कंशल ॥ सं २७३ मिमिआ
 श्विहो कस्यै चमीमनेश्चन
 वानध्वं कुरु ववाश्चमसु
 न्दननयद्वनिदयका कउ
 गुलिस्वयाठो श्रीनाथनचोका
 ॥ ॥ ॥

जयमालाधन ॥ ॥ नृदा
 क्षमिलपंचगव्यनमिचन ॥
 चदनीतिक्खानगय ॥ ३७
 कमा ॥ ३४ ॥ कः अम्हा

यद ॥ गाउन ॥ केकवचायं
 ॥ अवेगुं ॥ पावप्रतिष्ठा ॥
 ॐ आं कीं कों हं सः माहं अकच
 णययव नृदाक्षस्य पावः
 सर्वदिवाहि ॐ आं कीं कों हं
 सः माहं अकच णययव नृदा
 क्षस्य वाकचकु ॥ ३४ ॥
 सुर्वचिर्नतिष्ठ ॥ ३५ ॥ नृदा
 क्षधन ॥ धूपविश ॥ मूल
 मंगुन ॥ १०८ ॥ मालासपू
 जायाथ ॥ ॥ श्वनिमालाधन
 धन ॥ ॥ शानाहिल ॥ न्यास
 वकुं-पासपावाम ॥ शाना
 मां गुरुयक ॥ गाउन ॥ अवेगुं
 ० नृ ॥ ॥ धनमयतीन ॥ १०८
 ५४ ॥ ३५ ॥ ॐ वक्राग्निनागसाम
 धुपिदुदवप्रजायति ॥ वायुसु
 र्यसर्वदेवा ॥ ३४ ॥ नवदेवगा
 ॥ मयती ॥ ३४ ॥ ॥ निकाय
 कषाय ॥

दिगम्बर

